✺ 21 अप्रैल 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] जब शरीर की कोई बीमारी आती है तो ड्रामा का ज्ञान बहुत मदद करता है क्योंकि तुम जानते हो यह ड्रामा हूबहू रिपीट होता है। इसमें रोने पीटने की कोई बात नहीं। कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू होना है।

2] भगवान उनको कहा जाता है जिसको अपना शरीर नहीं है। ऐसे नहीं कि भगवान् का नाम, रूप, देश, काल नहीं है। नहीं, भगवान् को शरीर नहीं है।

3] भगवानुवाच मन्मनाभव। देह सहित देह के सब धर्मों को त्याग अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह एक ही बाप कहते हैं, जो गीता का भगवान हैं। भगवान् माना ही जन्म-मरण रहित।

4] ऐसे नहीं, सब कुछ भगवान् करता है, पूज्य, पुजारी, ठिक्कर-भित्तर परमात्मा है। 24 अवतार, कच्छ-मच्छ अवतार, परशुराम अवतार दिखाते हैं। अभी समझ में आता है कि क्या भगवान् बैठ परशुराम अवतार लेंगे और कुल्हाड़ा लेकर हिंसा करेंगे। यह रांग है।

✺ योग-

1] बाप कहते हैं तुम्हारे में भी खाद पड़ी है, उसको अब निकालना है। कैसे निकलेगी ? बाप से योग लगाओ। पढ़ाने वाले के साथ योग लगाना होता है ना। यह तो बाप, टीचर, गुरु सब कुछ है। उनको याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और वह तुमको पढ़ाते भी हैं।

2] तुम ब्राह्मण बैठे हो। देवताओं के पीढ़े हैं क्षत्रिय। द्वापर में पेट के पुजारी, फिर शूद्र बनते हैं। यह बाजोली है। तुम सिर्फ बाजोली को याद करो। यही तुम्हारे लिए 84 जन्मों की यात्रा है। सेकण्ड में सब याद आ जाता है। हम ऐसे चक्र लगाते है।

✺ धारणा-

1] अब इस देह का अहंकार छोड़ आत्म-अभिमानी बनो। आत्मा का भी ज्ञान दे दिया, जो बाप बिगर कोई दे न सके। कोई मनुष्य नहीं, जिसको आत्मा का ज्ञान हो।

2] यहाँ तुम आये हो जीते जी मरने। बाप पर न्योछावर होते हो। यह तो पुरानी दुनिया, पुराना चोला है। इनसे जैसे नफरत आती है, इनको छोड़कर जायें। कुछ भी याद न आये। सब-कुछ भूला हुआ है। तुम कहते भी हो भगवान् ने सब कुछ दिया है तो अब उनको दे दो। भगवान् फिर तुमको कहते हैं तुम ट्रस्टी बनो भगवान् ट्रस्टी नहीं बनेगा।

3] संगमयुग पर पाप आत्माओं से लेन-देन नहीं करनी है। कर्मों का हिसाब-किताब खुशी-खुशी से चुक्तू करना है। रोना पीटना नहीं है। सब कुछ बाप पर न्योछावर कर फिर ट्रस्टी बन सम्भालना है।

✺ सेवा-

1] पाप आत्माओं को दान किया तो पाप सिर पर चढ़ जायेगा। करते हो ईश्वर अर्थ और देते हो पाप आत्मा को। बाप कुछ लेते थोड़ेही हैं। बाप कहेंगे जाकर सेन्टर खोलो तो बहुतों का कल्याण होगा।

2] ईश्वरीय सेवा का बन्धन नजदीक सम्बन्ध में लाने वाला है। जितनी जो सेवा करता है उतना सेवा का फल समीप सम्बन्ध में आता है। यहाँ के सेवाधारी वहाँ की रॉयल फैमिली के अधिकारी बनेंगे। जितनी यहाँ हार्ड सेवा करते उतना वहाँ आराम से सिंहासन पर बैठेंगे और यहाँ जो आराम करते हैं वह वहाँ काम करेंगे। एक-एक सेकण्ड का, एक-एक हिसाब-किताब बाप के पास है।

3] स्व परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाओ।